ॐ

जिनगुणसम्पत्ति विधान

रचयिता
अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक
जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	जिनगुणसम्पत्ति विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
प्रसंग	:	पंचकल्याणक सप्त गजरथ महोत्सव पावागिरिजी 3 से 9 दिसम्बर 2019
लागत मूल्य	:	30/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना सम्पर्क-9425128817
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

अन्तर्भाव

जिनगुणसम्पत्ति विधान यह कृति संतशिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक, कविहृदय, बुंदेली संत शिष्य मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज के द्वारा तैयार की गई है। जिसका संकलन एवं संयोजन करके अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह कृति उन लोगों के लिए अत्यंत उपयोगी कृति है जो कि इहलौकिक सम्पत्ति को पाने की भावना से यहाँ-वहाँ भटकते रहते हैं और अपना संसार बढ़ाते रहते हैं। इस कृति में देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति-पूजा करने का एक नया सोपान तैयार किया गया है जिसके माध्यम से भव्य जीव लौकिक और पारलौकिक समस्त सुख-सम्पदा को प्राप्त कर अपना कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। प्रभु भक्ति और गुणगान आगमानुकूल अत्यंत सरल भाषा एवं सारभूत शैली में प्रस्तुत किया गया है।

मुनिश्री की लगभग ८० कृतियाँ हैं जिनमें विधान-पूजा, कहानी, आरती, भजन, नाटक, मुक्तक, कविताएँ आदि सम्मिलित हैं। आपके विधानों में चारों अनुयोगों के विषय समावेश हैं। विधान करते समय ऐसा लगता है कि हम भगवान की भक्ति करने के साथ-साथ स्वाध्याय कर रहे हों। ऐसा प्रतीत होता है कि जो बातें यहाँ कही गईं हैं वे सब बातें हमारे आस-पास के वातावरण में समाविष्ट हैं। सिद्धान्त की बात को भी बड़ी ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

जिन्होंने इस कृति के प्रचार-प्रसार में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से किसी भी माध्यम से सहयोग किया है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इस कृति के माध्यम से सभी लाभ लें इसी भावना के साथ गुरुदेव और मुनि श्री के चरणों में नमन...।

बा. ब्र. संजय, मुरैना

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पञ्च णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गये जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुये हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वंदन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुये पूर्ण सपने॥३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानंद हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शांति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय संबंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चंद्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शांतिनाथ स्वामी अर्घ्य (मालती)

जब-जब शांति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शांति विधान रचाये, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बंधन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाये, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अंबर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रः मुनि श्रीसुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

विधान प्रारंभ

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः-२
ये जीवन मिला हमें माटी के मोल।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोल॥
जय जिनेन्द्र बोलके ही आँखे खोलिए।
जय जिनेन्द्र बोलके ही आँखे मूंदिए॥
सोते जगते आत्मा के प्यारे नैन खोल।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोल॥
जय जिनेन्द्र बोलके ही मौन लीजिये।
जय जिनेन्द्र बोलके ही मौन खोलिए॥
अब हाय हेलो बोलने को मुँह न अपना खोल।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोल॥
जय जिनेन्द्र बोलके ही जिंदगी जियो।
जय जिनेन्द्र बोलके ही खाओ या पियो ॥
धर्म अपना पाल ने को कर कभी न मोल।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोल॥

स्थापना

(ज्ञानोदय)

जिनगुणसम्पत्ती को पाने, अपने मन को जो साधें।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर प्रकृति बाँधें॥
सो छ्यालीस मूलगुण प्रकटें, पर्व पंचकल्याणक हों।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु कर नत मस्तक हों॥

(दोहा)

हृदय हमारे आइये, हे! जिनवर, जिननाथ।
पूजन का आह्वान कर, हम तो टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूह ! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

इस जन्म-मरण के घट में, हम पाते हैं मरघट को।
तुम संयम की तरणी ले, पा बैठे आतम घट को॥
वह घट जिनवर सा पाएँ, सो नीर चढ़ाएँ आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

इस राग-द्वेष ज्वाला से, बागान जले आतम का।
पर जिनवर महक उठे सो, जिनभक्त यहाँ आ धमका॥
वह छाया प्रभु की पाएँ, सो चंदन अर्पित आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चदनं...।

क्षणभंगुर भूल-भुलैया, जग में उलझे संसारी।
जिनवर निज लक्ष्मी पाके, बन बैठे आत्म विहारी॥
वह अक्षयपद हम पाएँ, सो पुंज चढ़ाएँ आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

इस काम लुटेरे को ही, ज्यों किये पराजित जिनवर।
तो मुक्तिवधू ले आयी, वरमाला करे स्वयंवर॥
हम काम विजित कर पाएँ, सो पुष्प चढ़ाएँ आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पुद्गल के भोग नशीले, जिनवर जी त्याग चुके ज्यों।
आतम के भोग रसीले, चरणो में आन झुके ज्यों॥
हम आतम स्वादी बनने, नैवेद्य चढ़ाएँ आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान अँधेरे में भी, जिनवर निज ज्योत जलाये।
तब अटके-भटके प्राणी, अपनी मंजिल को पाये॥
हम अपनी आत्म निहारें, सो करें आरती आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

जिनवर के आत्म महल में, चारित्र सुगंधी महके।
सो कर्म कीट उड़ जाते, श्रद्धा की चिड़िया चहके॥
हम आत्म सुगंधी पाएँ, सो धूप चढ़ाएँ आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जब मिले पुण्य फल साँचा, तो समवसरण लग जाते।
पर अभव्य प्राणी जग में, प्रभु दर्शन तक ना पाते॥
साक्षात् मिले जिनदर्शन, सो करें भेंट फल आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं...।

जिनवर की शरण बिना तो, कल्याण नहीं हो सकता।
इसलिए आज हम सबको, जिनवर की आवश्यकता॥
सो जिनवर से मिलने को, हम अर्घ्य चढ़ाएँ आहा।
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

अर्घ्यावली

सोलहकारण अर्घ (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु पूज के, सम्यग्दर्शन होय।
विश्व शांति से शुद्ध कर, दर्शनविशुद्धि होय॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा दर्शनविशुद्धि-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१॥

गुणियों का सम्मान ही, धर्म महल आधार।
यही विनयसम्पन्नता, मोक्ष महल का द्वार॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा विनयसम्पन्नता-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥२॥

सप्तशील व्रत हैं जहाँ, वहाँ झुके संसार।
निरतिचार यह शील व्रत, है सुख का भंडार॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा निरतिचार शीलव्रत-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥३॥

सदा ज्ञान अभ्यास जो, करें आत्म का ज्ञान।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ये, करे स्व-पर कल्याण॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥४॥

जगत दुखों से जो डरे, मुनि बन बने जिनेश।
यही भाव संवेग है, सुख दे हमें विशेष॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा संवेग-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥५॥

यथाशक्ति से त्याग कर, जो करते निज दान।
मिलें रत्न निधियाँ उन्हें, वो बनते भगवान्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा शक्तितस्त्याग-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥६॥

यथाशक्ति से तप तपें, इच्छा करें निरोध।
बारह तप से कर्म हर, कर लें आतम शोध॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा शक्तितस्तप-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥७॥

नग्न दिगम्बर साधु के, करे विघ्न जो दूर।
साधुसमाधि है यही, सुख यश दे भरपूर॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा साधुसमाधि-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥८॥

मुनि-सेवा करना सदा, चर्या में सहयोग।
वैयावृत्यकरण यही, बने मुक्ति के योग॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा वैयावृत्यकरण-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥९॥

अर्हंतों की अर्चना, भाव भक्ति गुणगान।
अर्हद्भक्ति है यही, वीतराग विज्ञान॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अर्हद्भक्ति-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१०॥

शिक्षा दीक्षा दें हमें, मोक्षमार्ग दें दान।
आचार्यों की भक्ति कर, पा जाते निर्वाण॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा आचार्यभक्ति-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥११॥

उपाध्याय की भक्ति कर, मिटे पाप अज्ञान।
जीवों में हो मित्रता, पाते केवलज्ञान॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा बहुश्रुतभक्ति-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१२॥

आगमोक्त स्वाध्याय कर, अंतर तम हो नाश।
प्रवचन भक्ति दे यही, चित् चैतन्य प्रकाश॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा प्रवचनभक्ति-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१३॥

छह आवश्यक पालना, पूरे निज-निज काल।
आवश्यकापरिहाणि ये, करती मालामाल॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा आवश्यकापरिहाणि-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१४॥

ज्ञान ध्यान चारित्र से, रागद्वेष हर मान।
करके मार्ग प्रभावना, बढ़े धर्म की शान॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा मार्गप्रभावना-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१५॥

साथी से गोवत्स सम, रखें प्रेम वात्सल्य।
ये प्रवचन वत्सलत्व है, हरे जगत की शल्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा प्रवचन-वात्सल्य-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१६॥

पंचकल्याणक अर्घ (जोगीरासा)

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
इसी भावना से तीर्थंकर, प्रकृति बंध भी होवे॥
सो कुल पन्द्रह माहों तक तो, वर्षा हो रत्नों की।
पूज्य गर्भकल्याणक भजने, इच्छा हो भक्तों की॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा गर्भकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१॥

ज्यों तीर्थंकर प्रभु जन्में तो, जग त्यौहार मनाये।
सपरिवार सौधर्म इन्द्र आ, ऐरावत गज लाये॥
मेरु पर प्रभु न्हवन कराके, ताण्डव नृत्य रचाये।
पूज्य जन्मकल्याणक भजने, पूजन भक्त रचाये॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा जन्मकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥२॥

भव तन भोगादिक निमित्त से, तीर्थंकर लें दीक्षा।
पंच मुष्टिमय केशलोंच कर, करते पुण्य परीक्षा॥
लौकांतिक वैराग्य सराहें, पूजें संयम वस्तु।
तपकल्याणक भजने हम भी, सादर करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा तपकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥३॥

पुण्यफला चारित्र धार कर, करें साधना स्वामी।
शुक्लध्यान कर घातिकर्म हर, बनते केवलज्ञानी॥
समवसरण में दिव्य ध्वनि से, मोक्षमार्ग दर्शाएँ।
पूज्य ज्ञानकल्याणक हम भी, करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा ज्ञानकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥४॥

समवसरण तज योग निरोधकर, सम्मेदाचल जाके।
अघातिया हर पूर्ण शुद्ध हों, सिद्धशिला को पाके॥
लोक शिखर पर हुये विराजित, मोक्षधाम हम खोजें।
पूज्य मोक्षकल्याणक हम भी, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा मोक्षकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥५॥

अष्टप्रतिहार्य (चौपाई)

शोक निवारी अशोक तरुवर, जिसके नीचे शोभें जिनवर।
करके नमोऽस्तु शोक मिटाएँ, जिनगुणसम्पत्ती हम पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अशोकतरु महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१॥

रत्नजड़ित सिंहासन उज्ज्वल, जिस पर नभ में जिनवर मंगल।
करके नमोऽस्तु भ्रमण नशाएँ, जिनगुणसम्पत्ती हम पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सिहांसन महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥२॥

जिन चारित्र गंध जब महके, पुष्पवृष्टि सुरगण तब करते।
करके नमोऽस्तु निज महकाएँ, जिनगुणसम्पत्ती हम पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सुरपुष्पवृष्टि महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥३॥

दिव्यध्वनि ओंकार रूप हो, हरती सबके पाप कूप को।
करके नमोऽस्तु पाप नशाएँ, जिनगुणसम्पत्ती हम पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा दिव्यध्वनि महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥४॥

सुरगण चौंसठ चँवर ढुराएँ, जिनशासन की शान बढ़ाएँ।
करके नमोऽस्तु अतिशय पाएँ, जिनगुणसम्पत्ती हम पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा चामर महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥५॥

सात-सात कुल भव दर्शाएँ, भामण्डल नित कांति बढ़ाएँ।
करके नमोऽस्तु आत्म सजाएँ, जिनगुणसम्पत्ती हम पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा भामण्डल महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥६॥

देव दुंदुभी सुखद बजाएँ, जिनवर का संगीत सुनाएँ।
करके नमोऽस्तु हम जग जाएँ, जिनगुणसम्पत्ती हम पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा देव दुंदुभि महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥७॥

तीन लोक के स्वामीपन की, होती दशा तीन छत्रन की
करके नमोऽस्तु हम जग जाएँ, जिनगुणसम्पत्ती हम पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा छत्रत्रय महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥८॥

जन्म के दस अतिशय

(हाकलिका)

दस अतिशयमय हुआ जनम, प्रथम स्वेदमय प्रभु का तन।
नमोऽस्तु कर जिन बन जाएँ, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा निःस्वेदत्व जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१॥

मलमूत्रों के बिन काया, विस्मयकारी तन पाया।
नमोऽस्तु कर शुचि बन जाएँ, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा मलमूत्ररहित जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥२॥

समचतुष्कसंस्थान रहे, ध्यान योग्य यह ध्यान रहे।
नमोऽस्तु कर थिर हो जाएँ, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा समचतुष्कसंस्थान जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥३॥

वज्रवृषभ संहनन पहला, कर्म हरे दें मोक्ष भला।
नमोऽस्तु कर भय नश जाएँ, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा वज्रवृषभनाराचसंहनन जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥४॥

परम सुगंधित तन पाया, जग आतम को महकाया।
नमोऽस्तु कर पूजन गाएँ, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सुगंधित शरीर जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥५॥

रूप सलोना सुंदर सा, वीतराग का मंदिर सा।
नमोऽस्तु कर प्रभु को ध्याएँ, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वांगसुंदर जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥६॥

एक हजार आठ लक्षण, भक्त पूजते हैं क्षण-क्षण।
नमोऽस्तु कर निज गुण गाएँ, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अष्टसहस्त्रलक्षण जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥७॥

प्रभु वात्सल्य रखे सब में, श्वेत रुधिर हो सो तन में।
नमोऽस्तु कर मंगल चाहें, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥८॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा वात्सल्य जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥८॥

हितमित प्रिय प्रभु वाणी हो, निज-पर की कल्याणी हो।
नमोऽस्तु कर प्रवचन चाहें, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥९॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा हित-मित-प्रिय वचन जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥९॥

अतुल्य बल हो प्रभु तन में, हम भी रम लें चेतन में।
नमोऽस्तु कर निज बल ध्याएँ, जिनगुणसम्पत्ती पाएँ॥१०॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अतुलबल जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१०॥

केवलज्ञान के दस अतिशय

(लय—आनंद अपार है...)

प्रभु को केवलज्ञान हो, शुद्धातम का ध्यान हो।
आओ! हम तो करें नमोऽस्तु, अपना भी कल्याण हो॥
जैसे केवलज्ञान हुआ तो, सुभिक्षता सब ओर हुई।
सौ-सौ योजन पार सभी की, सुखशांति की भोर हुई॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा गव्यूतिशतचतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१॥

केवलज्ञानी जब भी चलते, नभ में चरण रखें स्वामी।
ऊपर देव भक्त हों नीचे, सब जग के हों कल्याणी॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा गगन गमनत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥२॥

जब भी जिनवर चलें गगन में, किसी जीव का घात न हो।
मैत्री भाव जगत में उमड़े, दुख दर्दों की बात न हो॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥३॥

सुर-नर-पशु वा प्रकृति वाले, होते न उपसर्ग वहाँ।
जहाँ विराजें केवलज्ञानी, होते हैं नित पर्व वहाँ॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥४॥

घातिकर्म के क्षय होने पर, भूख प्यास के कष्ट न हों।
कवलाहार नहीं होता है, धर्म पंथ से भ्रष्ट न हों॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥५॥

पूर्वदिशा में अपना मुखकर, सदा विराजें जिनवर जी।
लेकिन चतुर्मुखी दिखते हैं, जिनभक्तों को जिनवर जी॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥६॥

हर विद्या के ईश्वर होते, केवलज्ञानी अर्हन्ता।
सकल चराचर जान रहे हैं, इसीलिए हों जयवन्ता॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वविद्येश्वर घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥७॥

हुआ परम औदारिक तन तो, छाया के क्या काम रहे।
ज्ञान चेतना के अधिकारी, भक्तों के भगवान रहे॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥८॥

कर्मों की त्रेसठ प्रकृति ज्यों, शुक्लध्यान से नष्ट हुईं।
बिना बढ़े वह नख केशों की, एक रूपता शिष्ट हुईं॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा समनखकेशत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥९॥

नेत्रों की पलकें ना झपकें, नहीं केश भौं हिलते हैं।
वीतरागता नासा दृष्टी, ऐसे अतिशय दिखते हैं॥ प्रभु को...

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अपक्ष्मस्पन्दत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१०॥

देवकृत चौदह अतिशय

(अर्ध विष्णु)

अर्धमागधी भाषा से सुर, प्रभु के तत्त्व कहें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१॥

सब जीवो में मैत्री वाले, जिनगुण भाव करें॥
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्व जीव मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥२॥

छह ऋतुओं के फल-फूलों मय, तरुवर देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वर्तुफलादितरुपरिणाम देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥३॥

दर्पण जैसी रत्नों जैसी, धरती देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥४॥

मंद सुंगधित पवन बहाके, अतिशय देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥५॥

सर्व जीव आनंद रूप हों, सुखिया देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥६॥

धूल कीच काँटो बिन निर्मल, धरती देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा वायुकुमारोपशमित धूलि-कंटकादि देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥७॥

रिमझिम रिमझिम गंधोदक की, वर्षा देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा मेघकुमारकृत गंधोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥८॥

विहार में पद तल कमलों की, रचना देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥९॥

जिनभक्ती से नभ मंडल को, निर्मल देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा गगन निर्मल देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१०॥

दशों दिशाएँ उच्च गगन की, पावन देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्व दिशा निर्मल देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥११॥

जय जयकार गगन में गूँजे, अतिशय देव करें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१२॥

धर्मचक्र को विहार में ले, आगे देव चलें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करें॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१३॥

मंगल द्रव्य साथ में लेकर, आगे देव चलें।
जिनगुणसम्पत्ती पाने हम, नमोऽस्तु आज करे॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै अर्घ्यं...॥१४॥

पूर्णार्घ्य

(दोहा)

सोलहकारण भावना, अर्हतगुण छ्यालीस।
पाँचों कल्याणक यही, जिनगुण सम्पत्तीश॥
पृथक-पृथक वा साथ में, करके नमोऽस्तु रोज।
अर्घ्य चढ़ाएँ भक्ति से, करने निज की खोज॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

घातिकर्म ज्यों नश गये, त्यों हो केवलज्ञान।
जिनगुणसम्पत्ती भजें, कर नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(काव्यरोला)

कर नमोऽस्तु धर ध्यान, गीत जिनवर के गाएँ।
समवसरण का धाम, शीघ्र हम भी तो पाएँ॥
सोलहकारण भाए -भावना प्रभु के पद में।
तीर्थंकर पद बाँध -जाए स्वर्गों की हद में॥१॥
गर्भ जन्म कल्याण, हुए धरती पर ज्यों ही।
जिनशासन की शान, गूँजती जग में त्यों ही॥
होता तप कल्याण, दिखे नश्वरता जग की।
फिर हो केवलज्ञान, पुजें तीर्थंकर पदवी॥२॥
जैसे हुई दरिद्र, सुमति सेठानी जग मे।
करता कोई न कद्र, दुखी होती पग-पग में॥
मुनि से जान अतीत, मुनि निंदा के द्वारे।
हम दुखिया भयभीत, हुए निर्धन बेचारे॥३॥
मुनि से पूछ उपाय, किए जिनगुणसम्पत्ति।
दुख दरिद्र नश जाए, मिले साँची सम्पत्ति॥
रहें न तन में रोग, शांति हो अंदर-बाहर।
मिलें सुखद संयोग, साधु हों जिन पथ पाकर॥४॥
करके सुमति विधान, दान देकर की भक्ति।
दान तीर्थ के नाम, श्रेयांस बन पाई मुक्ति॥
'सुव्रत' करें विधान, व्रतों का करके पालन।
सबका हो कल्याण, करें निज आतम पावन॥५॥

(दोहा)

पावन तन मन कर सकें, करके पूजन पाठ।
जिनगुणसम्पत्ती भजें, कर नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा श्री जिनगुणसम्पत्ति समूहेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

श्री जिनवर स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजन भगवान॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, हे स्वामी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

मालथौन के नगर में ,मूल पार्श्व भगवान।
जिनगुणसम्पत्ती यहीं, पूरा हुआ विधान॥
प्यारी सोलह फरवरी, दो हजार उन्नीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥

जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शांति दें, करें विश्व कल्याण॥ (जल धारा...)
अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥ (चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

आरती—श्री पंचपरमेष्ठी

(लय—कैसे धरें मन धीरा...)

जिनवर की बोलौ जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
पहली आरति श्री अरिहंता-२
केवलज्ञानी जिन भगवन्ता-२
झूम-झूम गुण गाऔ रे, भाग्य अपनौ सँभारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
दूजी आरति सिद्ध जिनों की-२
मुक्त हुए मुनि तपोधनों की-२
करौ साधना सुमरौ रे, मंजिल खौं निहारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
तीजी आरति आचार्यों की-२
शिव राही-दाता आर्यों की-२
करौ अर्चना पूजौ रे, करनी तौ सुधारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
चौथी आरति उवझायों की-२
ज्ञान चरित पथ के रायों की-२
करौ उपासा सेवा रे, मिलै अपनौ उजारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
पाँचवी आरति साधु जनों की-२
आतम साधक तपोधनों की-२
करौ वन्दना संगत रे, आतम खौं निखारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....

करौ आरती जिनवाणी की-२
हितकारी जग कल्याणी की-२
चलौ गैल 'सुव्रत' साँची, आज्ञा उर में धारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....

===

आरती—विधान

ओम् जय जिनवर देवा, स्वामी जय जिनवर देवा।
आरती करके तुम्हारी, मिले मुक्ति मेवा॥ ओम्...
तीरथ धर्म प्रवर्तक, तीर्थंकर ज्ञानी। स्वामी...
लोकालोक निहारी, शुद्धातम ध्यानी॥ ओम्...
सोलहकारण भायीं, कल्याणक पाये। स्वामी...
रत्नों की वर्षा से, खुशियाँ जग पाये॥ ओम्...
पाण्डुकशिला नह्वन से, जग आनंद करें। स्वामी...
राज पाठ ज्यों त्यागे, तप कल्याण करें॥ ओम्...
घातिकर्म ज्यों नाशे, समवसरण लागे। स्वामी...
धर्म देशना सुनके, दुख समूह भागे॥ ओम्...
मुक्तिवधू वरमाला, करे स्वयंवर भी। स्वामी...
हो निर्वाण महोत्सव, जय-जय जिनवर जी॥ ओम्...
जिनगुणसम्पत्ती पाने, हम आरती करते। स्वामी...
'सुव्रत' हो निज सुखिया, सो नमोऽस्तु करते॥ ओम्...

===

जिनगुणसम्पत्ति व्रत जाप्य

१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा दर्शनविशुद्धि-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा विनयसम्पन्नता-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा निरतिचार शीलव्रत-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा संवेग-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

६. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा शक्तितस्त्याग-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

७. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा शक्तितस्तप-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

८. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा साधुसमाधि-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

९. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा वैयावृत्यकरण-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

१०. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अर्हद्भक्ति-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

११. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा आचार्यभक्ति-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

१२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा बहुश्रुतभक्ति-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
१३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा प्रवचनभक्ति-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
१४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा आवश्यकापरिहाणि-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
१५. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा मार्गप्रभावना-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
१६. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा प्रवचन-वात्सल्य-भावना-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
१७. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा गर्भकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
१८. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा जन्मकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
१९. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा तपकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
२०. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा ज्ञानकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
२१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा मोक्षकल्याणक मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
२२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अशोकतरु महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।
२३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सिंहासन महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

२४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सुरपुष्पवृष्टि महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

२५. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा दिव्यध्वनि महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

२६. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा चामर महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

२७. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा भामंडल महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

२८. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा देव दुंदुभि महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

२९. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा छत्रत्रय महाप्रातिहार्य-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३०. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा निःस्वेदत्व जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा मलमूत्ररहित जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा समचतुष्कसंस्थान जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा वज्रवृषभनाराचसंहनन जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सुगंधित शरीर जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३५. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वांगसुंदर जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३६. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अष्टसहस्त्रलक्षण जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३७. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा वात्सल्य जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३८. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा हित-मित-प्रिय वचन जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

३९. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अतुलबल जन्मातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४०. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा गव्यूतिशतचतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा गगन गमनत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४५. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४६. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वविद्येश्वर घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४७. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४८. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा समनखकेशत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

४९. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अपक्ष्मस्पन्दत्व घातिक्षयजातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५०. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वार्धमागधीय भाषा देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्व जीव मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५५. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५६. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा वायुकुमारोपशमित धूलि-कंटकादि देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५७. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा मेघकुमारकृत गंधोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५८. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

५९. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा गगन निर्मल देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

६०. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा सर्व दिशा निर्मल देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

६१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा आकाशे जय जयकार देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

६२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा धर्म चक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

६३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय-मण्डित जिनगुणसंपत्यै नमः।

===

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं-२,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥

सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥१॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥२॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥३॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥४॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख-ती।
राजा श्रेयांस-सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥५॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥६॥

जिनगुण सम्पत्ति व्रत कथा

धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व मेरु संबंधी पश्चिम विदेह क्षेत्र में गांधील नामक देश और पाटलिपुत्र नाम का नगर अपनी शोभा से युक्त है। उस नगर में नागदत्त नाम का एक सेठ और उसकी सुमति नाम की सेठानी दोनों दम्पत्ति रहते थे। धनहीन होने के कारण अत्यंत पीड़ित व दुखी थे। ये दम्पत्ति जंगल में से काठ आदि लाकर उसे बेचकर अपनी भरण-पोषण करते थे। एक दिन सेठानी जंगल में थककर एक वृक्ष की छाया में बैठी थी, इतने में बहुत से नर-नारियों के समूह को बड़े उत्साह के साथ जाते देखकर आश्चर्ययुक्त होती हुई उनसे पूछती है–

अहो बन्धुओ! माता-बहिनो! आज आप बड़े उत्साह के साथ हाथों में अनेक प्रकार की सुंदर सामग्री लेकर कहाँ जा रहे हो? यह कौन सा उत्सव है? पूछने पर जनसमूह ने उत्तर दिया कि इस अम्बरतिलक नाम के पर्वत पर पिहितास्रव नाम के बड़े ज्ञानी मुनिराज आये हैं, हम सभी उन्हीं के दर्शन पूजा के लिए बड़े उत्साह से जा रहे हैं। यह शुभ समाचार सुनकर सुमति सेठानी फूली न समाई और बड़ी भक्ति भाव से उन सब लोगों के साथ वंदना करने के लिए चल दी।

क्रमशः सभी लोग मुनिराज के पास पहुँच गये। सबने बड़ी भक्ति से अष्ट द्रव्यों से पूजन दर्शन करते हुए अपनी जीवन को सफल बनाते हुए मन-वचन-काय को एकाग्र करके मुनिराज का धर्मोपदेश सुनने के लिए बैठ गये।

मुनिराज ने अपने उपदेश में देवपूजा, गुरु सेवा, स्वाध्याय, संयम, तप, दान रूप षट् कर्मों का तथा अहिंसा, सत्य, अचौर्य, स्वदारसंतोष और परिग्रहपरिमाण रूप पाँच अणुव्रत, चार शिक्षाव्रत,

तीन गुणव्रत इन बारह व्रतों का उपदेश देते हुए सम्यग्दर्शन का स्वरूप बतलाया। इस प्रकार उपदेश सुनकर सब लोग अपने-अपने गन्तव्य की ओर चले गये।

दरिद्रता से अत्यन्त दुखी सुमति सेठानी समय पाकर मुनिराज से अपने दुखों की कहानी कहने लगी–हे भगवन! हे दीनबनधु! हे दयासागर! हे पतितपावन! हे भवतारक! मैं गरीब अबला दरिद्रता से अत्यन्त दुखी होकर दुखों को भोग रही हूँ। मैं इस दुख से बहुत ही व्याकुल हो गई हूँ। हे स्वामिन्! किस कारण से मेरे से सम्पत्ति दूर जा रही है और अब किस तरह वह सम्पत्ति मिल सकती है जिससे मेरा यह दुख मिट सके और मैं सुख का अनुभव करूँ क्योंकि दरिद्रता मिटे बिना धर्म साधना करने के लिए मनुष्य असमर्थ रहता है। मेरी भी ऐसी ही हालत हो रही है।

जिस समय सब लोग धर्मोपदेश सुन रहे थे उस समय दरिद्रा सेठानी अपनी दारिद्ररूपी तत्त्व के विचार में निमग्न हो रही थी। इसलिए उसने अवसर पाकर अपना विचार मुनिराज के समक्ष कह सुनाया।

जिनके राजा-रंक, महल-श्मशान, काच-कनक, शत्रु-मित्र समान होते हैं ऐसे उन करुणावान मुनिराज ने बड़े शीतल एवं शांतता से उस सुमति सेठानी को निम्न प्रकार समझाया–

हे समते! ध्यानपूर्वक सुनो-पलारकूट नामक गाँव में दिबिलह नाम का राजा सुमति नाम की रानी तथा रूप यौवन से सम्पन्न धनश्री नाम की पुत्री के साथ रहते थे। एक दिन वह धनश्री अपनी ५-७ सखियों के साथ वनक्रीड़ा करने को राज्य के बाहर उद्यान में गई। वहाँ परम तपस्वी उद्भट विद्वान समाधिगुप्त नामक मुनिराज एक वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न थे। तब वह मदोन्मत्त अपने रूप यौवन से

गर्विष्ठ धनश्री मुनिराज को देखकर निन्दात्मक अनेक प्रकार के भण्ड वचन बोली और मुनिराज के ऊपर बहुत से शिकारी कुत्ते छुड़वा दिये। जिससे मुनिराज के ऊपर भारी उपसर्ग हुआ किन्तु धीर-वीर परम तपस्वी मुनिराज अपने ध्यान से विचलित नहीं हुए।

इस मुनि निंदा के कारण धनश्री आयु पूर्णकर मरकर सिंहनी हुई और सिंहनी की पर्याय को पूर्ण करके तू धनहीन दरिद्री हुई। जो कोई मूर्ख इस तरह मुनि निंदा व उन पर उपसर्ग करता है वह इसी प्रकार नीच गति को प्राप्त होकर अनेक कष्टों को प्राप्त करता है।

सुमति सेठानी यह सब वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त दुखी होकर रोने लगी फिर हिम्मत कर दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव से पूछने लगी- हे गुरुराज! इस महापाप से छुटकारा कैसे पाऊँगी?

तब मुनिराज ने कहा-पुत्री! तुम घबराओ नहीं। तुम्हें अपनी भूल पर पश्चाताप है और अपना भला चाहती हो तो सम्यग्दर्शन पूर्वक जिनगुणसम्पत्ति व्रत करो जिससे तुम्हारे मनवांछित कार्य की सिद्धि निश्चित होगी।

इस व्रत की विधि इस प्रकार है-प्रथम जिन सोलहकारण भावनाओं को भाने से मनुष्य तीर्थंकर प्रकृति का बंध करता है ऐसे उनके १६ उपवास, पंचकल्याण के ५, अष्टप्रातिहार्य के ८, चौंतीस अतिशयों के ३४ इस तरह कुल ६३ उपवास या प्रोषध (एकभुक्ति) करो। उपवास के दिन सभी गृहारम्भ-परिग्रह छोड़कर भगवान् की भक्ति-पूजन करो और दिन में तीन वक्त सामायिक, स्वाध्याय आदि करो। जब तक व्रत पूर्ण नहीं होवे तब तक इसी तरह करती रहो। साथ में जिनगुणसम्पत्ति मंत्रों की त्रिकाल जाप करो।

व्रत पूर्ण होन पर मंदिर में मण्डप बनाकर ६३ फल और अनेक प्रकार की द्रव्य सामग्री लेकर बड़े समारोह से साथ भगवान्

की पूजा-विधान करो। पात्रदान करके यथायोग्य गरीबों को दान करो। जिनालय में चँदोवा, चँवर, छत्र, झालर, घंटा आदि उपकरण भेंट करो और ज्ञानावरणी कर्मक्ष्यार्थ श्रावक-श्राविकाओं को ६३ ग्रंथ बाँटो। इस प्रकार विधि पूर्वक उद्यापन करो। उद्यापन की शक्ति ना हो तो व्रत दूना करो।

इस प्रकार सुमति सेठानी ने मुनिराज के मुखकमल से व्रतों की विधि सुनकर व्रत ग्रहण किया और यथाशक्ति व्रत का पालन करके उद्यापन किया। आयु के अंत में संन्यास मरण करके स्वर्ग में ललितांग देव की मुख्य देवी हुई। पुण्य प्रभाव और व्रत के महात्म्य से वह स्वयंप्रभा दवी अनेक प्रकार के सुखों का अनुभव करने लगी। देव पर्याय पूर्ण करके स्वर्ग से चयकर जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह में चक्रवर्ती की लक्ष्मीवती नाम की रानी के उदर से श्रीमती नाम की पुत्री हुई। इस लड़की का विवाह वज्रजंघ राजा के साथ हुआ।

एक दिन ये दोनों दम्पत्ति वनक्रीड़ा करने के लिए गये। वहाँ पर सर्प सरोवर क तट पर मुनिराज के दर्शन किये और उन्हीं चारण ऋषीश्वरों को बड़ी भक्ति से आहार दिया। उस आहारदान के प्रभाव से दोनों दम्पत्ति भोगभूमि में उत्पन्न हुए, वहाँ से देव हुए। देव आयु को पूर्ण करके जम्बूद्वीप में मनुष्य पर्याय को धारण करके उत्कृष्ट आर्यिका के व्रत धारण किये और उत्कृष्ट व्रतोपवासादि करते हुए अंत में संन्यास धारण कर स्त्री लिंग का छेदकर स्वर्ग में देव हुई। वहाँ की आयु पूर्ण कर जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह संबंधी वत्सलावती देश में सुसीमा नाम की नगरी में सुबुधि नामक राजा की मनोरमा रानी के उदर से केशव नाम का पुत्र हुई। केशव ने अपने पिता के दिए हुए राज्य को न्यायनीति पूर्वक चलाया और अनेक प्रकार के भोगों को भोगा। एक समय कोई कारण पाकर वैराग्य हो गया और

सीमंधर स्वामी के चरणों में दिगम्बरी दीक्षा धारण करके घोर तप किया। तप के प्रभाव से सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ। वहाँ २२ सागर पर्यन्त सुखानुभव करके वहाँ से चयकर जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र में पुष्कलावती रानी के उदर से धनदेव नामक पुत्र हुआ, वह चक्रवर्ती का भण्डारी हुआ।

एक दिन धनदेव चक्रवर्ती के साथ मुनिराज के धर्मोपदेश सुनकर वैराग्य को प्राप्त हो गया और कर्मनाशिनी जिनदीक्षा धारण कर घोर तपस्या करके आयु के अंत में समाधिमरण कर सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हुआ। वहाँ से चयकर भरतक्षेत्र के कुरुजांगल देश में हस्तनापुर नगरी में श्रेयान्स नाम का राजा हुआ। इन्होंने बहुत दिनों तक राज्य वैभव के मनोहर भोग भोगे और प्रथम तीर्थंकर श्री १००८ वृषभनाथ महामुनिराज को भक्तिपूर्व इक्षुरस का आहार दान दिया। उस दान के प्रभाव से दानवीर कहलाये। दान की प्रथा श्रेयांस राजा से ही प्रारंभ हुई । इसके बाद वह राजा श्रेयांस वृषभनाथ भगवान के समवसरण में धर्मोपदरेश सुनकर वैराग्य को प्राप्त कर जिनदीक्षा लेकर उग्र तप करते हुए आत्मा में निमग्न होते चले गये और शुक्लध्यान के द्वारा केवलज्ञान को पाकर मोक्षपद को प्राप्त किया।

जिस प्रकार सुमति नाम की दरिद्रा सेठानी ने जिनगुणसम्पत्ति व्रत को सम्यक् पूर्वक पालन करके अनुक्रम से मोक्षपद प्राप्त किया। उसी प्रकार जो भव्य जीव जिनगुणसम्पत्ति व्रतों को विधिपूर्वक करेंगे वो भी निश्चित रूप से अविनाशी पद के स्वामी बनेंगे।

===